

दीपा चौहान 'दीपगीत'

जोधपुर, राजस्थान

रुख़ देखकर हवाओं का

रुख़ देखकर हवाओं का
पंछी नहीं उड़ा करते हैं
मंज़िल को निगाहों में रख
वह तो अपनी धुन में
सफ़र करते हैं
निकल पड़े हो "दीप"
मंजिल की तलाश में,
फिर क्या डरना
बेबाक हवाओं से,
यह देंगी चुनौती तुम्हें
परखेंगी तेरे हौसले को,
निगाहों में तुम भी
ग़रूर रखना,
देकर अपना परिचय
संघर्ष जारी रखना,
खुद ब खुद हवाएं
तुम्हें जान जाएंगी,
देखकर लगन तुम्हारी
सामने तुम्हारे झुक जाएंगी।

यह जीवन का तराना

खुश रहने के बहाने
क्यों ढूंढते हो?
हर घड़ी हर पल में
रहती है जीवन की खुशी,
कभी सीखो फूलों से
मुस्कुरा कर खुशबू लुटाना,
कभी हवाओं से सीखो
बिना बात के बहकना,
सूरज से सीखो
रोशनी का खजाना लुटाना,
आती जाती सांसों से
सीखो "दीप"
नहीं रुकता घड़ी भर भी
यह जीवन का तराना

